संस्कृति एवं व्यक्तित्व
(Culture and Personality)

व्यक्तित्व का सामान्य अर्थ व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक लक्षणों का कुल योग होता है, जिसके कारण प्रत्येक व्यक्तित्व एक दूसरे से समान या एक दूसरे से एकदम भिन्न होता है। किम्बाल यंग के अनुसार — "व्यक्तित्व एक व्यक्ति की आदतों, मनोवृत्तियों, लक्षणों तथा विचारो का ऐसा संगठित योग है जो सतही स्तर पर विशिष्ट एव सामान्य भूमिकाओं एव स्थिति के रूप में तथा आन्तरिक रूप में उसकी आत्मचेतना या अहम् की धारणा, मूल्यों तथा उद्देश्यों की चारो ओर संगठित होता है।"

इगर के अनुसार :— "व्यक्तित्व एक व्यक्ति के ऐसे व्यवहार का समग्र है, जिसके अन्तर्गत प्रदत प्रवृत्तियों की पद्धति परिस्थितियों का एक सिलसिला के साथ अन्त: क्रिया होती है।"

इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति किसी खास परिस्थिति मे हमेशा एक निश्चित ढंग से व्यवहार करता है।

समाजशास्त्र और मानवशास्त्र के क्षेत्र में यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि संस्कृति पर व्यक्तित्व का बहुत ही गहरा प्रभाव होता है। एक ही परिस्थिति मे विभिन्न धर्मो एव समुदायो के लोग विभिन्न प्रकार से आचरण करते है, जिसके पीछे यदि कोई सबसे प्रमुख कारण है, तो वह है सांस्कृतिक विभिन्नता। प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व मे उसकी संस्कृति का प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है, लेकिन इससे यह नही समझा जाना चाहिए कि व्यक्तित्व का विकास मात्र संस्कृति के ही प्रभाव में होता है। अन्य कारको की

classmate

Date ____
Page ____

भूमिका भी कोई कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। मुख्य रूप से व्यक्तित्व के विकास चार कारकों के प्रभाव में होता है। अन्य कारकों की भूमिका भी है। ये चार कारक निम्नलिखित है!— (1) जैविक विरासत, (2) भौतिक पर्यावरण, (3) समूह अनुभव, (4) संस्कृति।

(1) जैविक — विरासत :—

जैसे ईंट या पत्थर के अभाव में भवनों का निर्माण नहीं हो सकता है, वैसे ही जैविक विरासत के अभाव में व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सकता है। स्वस्थ शरीर एवं स्वस्थ मस्तिष्क के अभाव में व्यक्तित्व का विकास हमेशा दोषपूर्ण होगा। मानसिक रूप से असंतुलित व्यक्ति कभी भी सामाजिक मान्यताओं के अनुसार आचरण नहीं कर सकता है। व्यक्तियों में विभिन्न कार्यों के सम्पादन की क्षमता एवं योग्यता इस बात पर निर्भर करती है कि वह जन्म से कितना सक्षम एवं मेधावी है। सभी व्यक्ति न्यूटन आईन्सटीन, कार्ल मार्क्स, गाँधी और बुद्ध की तरह योगपुरुष नहीं हो सकते है।

(2) भौतिक पर्यावरण :—

भौतिक पर्यावरण और व्यक्तित्व के बीच का संबंध स्पष्ट करते हुए विद्वानों ने तर्क दिया है कि भौतिक पर्यावरण, विशेषकर जलवायु का, व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। चूंकि भौतिक पर्यावरण संस्कृति के स्वरूप को प्रभावित करता है, इसलिए भौतिक पर्यावरण के अन्तर्गत व्यक्ति का व्यक्तित्व भी प्रभावित होता है अफ्रिका के लोगों का व्यक्तित्व भारत के

लोगों के व्यक्तित्व से भिन्न होने का कारण यही है कि इन दोनों क्षेत्रों का भौतिक पर्यावरण अलग - अलग है।

③ समूह अनुभव (Group Experience) :— व्यक्ति जिस प्रकार के समूह में रहता है उसका व्यक्तित्व भी वैसा ही बनता है। यदि कोई व्यक्ति चोर, उचक्का, डकैत, अपराधी किस्म के व्यक्ति के सम्पर्क में रहेगा तो उसका भी व्यक्तित्व वैसा ही बनेगा। गलत किस्म के लोगों के बीच एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण शायद ही हो सकता है। यह सर्वविदित है कि व्यक्तित्व पर संगति या संसर्ग का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी समाज के संसर्ग में ही आकर कुछ सीखता है। कूले का आत्मन् दर्पण (Looking-glass Self) का सिद्धान्त इस बात का समर्थन करती है कि व्यक्तित्व पर सामूहिक जीवन का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

④ संस्कृति (Culture) :— जिस समाज की जैसी संस्कृति होती है उस समाज के लोगों की मनोवृत्ति, सामाजिक प्रेरणाएँ, इच्छाएँ, विचार आदर्श एवं जीवन के मूल्य भी वैसी ही होगी। रुथ बेनीडिक्ट ने अपने एक मानवशास्त्रीय अध्ययन में यह बताया है कि मेलानीजिया (Melanesia) में रहनेवाले डोबू (Dobu) लोग यही मानते है कि इस विश्व का संचालन किसी प्रकार जादू से होता है। समाज में जितनी भी किस्म कि बिमारियाँ और घटनाएँ घटती है, उनके पीछे किसी-न-किसी जादू का ही हाथ होता है। समाज

में जितनी भी किस्मकी घटनाएँ होती है उसमें जादू का ही हाथ होता है।
ठीक इसके विपरित बेनीडिक्ट के एक अन्य समाज के अध्ययन से यह मालूम होता है कि न्यू मेक्सिको के जूनी लोग बहुत ही सहयोगी प्रकृति के होते है। उनके समाज में अपराध और झगड़ा शायद ही कभी देखने को मिलता है। वे लोग बहुत महत्वाकांक्षी नहीं होते। उनके बीच अधिकार प्राप्त करने के लिए कभी संघर्ष नहीं होता। किसी के ऊपर नेतृत्व का भार जबरदस्ती थोप दिया जाता है उनके यहाँ पाप पुण्य की बात नहीं होती। उनका परिवार मातृवंशीय और मातृसतात्मक होता है। जहा एक तरफ दोबू लोग बड़े शक्की, धोखेबाज खतरनाक, अविश्वासी एंव जादू-टोना में विश्वास करने वाले होते है, वही जूनी लोग बहुत ही सरल, उदार, विनम्र एंव सहयोगी होते है
इन दो उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक समाज में लोगों का व्यक्तित्व अलग-अलग ढंग से विकसित होता है। एक संस्कृति के लोगों का व्यक्तित्व लगभग एक प्रकार का होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा परिवार एंव अन्य अभिकरण अपने बच्चों को वे सीखाते है जो उस संस्कृति में मान्य होती है:- जैसे- प्रथा कानून रीति-रिवाज, आदर्श, विश्वास, सामाजिक नियम-कानून इत्यादि। इन तत्वों का बच्चों के व्यक्तित्व पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक समाज की अपनी कुछ अलग संस्कृति होती है और इस सांस्कृतिक भिन्नता के कारण ही एक भारतीय अन्य देशों के लोगो से अलग दिखाई पड़ता है